International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5. 12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 31-33

रामायण में नारी की स्थिति

डॉ0 अशोक कुमार दुबे

एसोशिएट प्रोफेसर संस्कृत–विभाग, बी0 एस0 एन0 वी0 पी0 जी0 कॉलेज लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
हमारी संस्कृति में नारी का स्थान अत्यन्त ऊँचा है। नारी को देवी के पद पर प्रतिष्ठित किया गया है। अपनी गरिमा, तेजस्विता के कारण भारतवर्ष की नारी सम्पूर्ण विश्व में पूजनीया है। नारी परिवार का केन्द्र बिन्दु है, समाज का आधार है। समय के अनुसार नारी की सोच उसकी मानसिकता में अन्तर आया है। स्त्री के प्रति समाज का भी दृष्टिकोण परिवर्तित हुआ है। कल घर आंगन तक सीमित नारी आज आकाश छूने को तत्पर ळें भारतीय संस्कृति में नारी को देवी का स्थान प्राप्त है जीवन की धारा में नारी पुरूष के साथ मिलकर शक्ति का रूप लेकर साधिका बनती है। नारी सेवा और त्याग की मूर्ति है।

मूल शब्द: संस्कृति, रामायण, नारी की स्थिति

प्रस्तावना
वाल्मीकि रामायण में मनुष्य जीवन के प्रत्येक पक्ष का चित्रण हुआ है यह एक परिवार से सम्बद्ध गृहस्थाश्रम के आदर्शों एवं नैतिक व्यवहारों का प्रेरक ग्रन्थ है । इस ग्रन्थ में स्त्री के नाना रूपों का चित्रण हुआ है। उस काल में पुरुष अपनी पत्नी के सहयोग से ही समस्त यज्ञादि धर्म अनुष्ठान करता है। पुरुष अपने पितृऋण, दैवऋण, ऋषिऋण से उऋण होने के लिए श्राद्ध यज्ञ एवं अतिथि सत्कारादि व्रतों की पूर्ति में पत्नी सहयोग से ही संभव है। रामायण काल में संयुक्त परिवार प्रणाली का प्रचार था। परिवार का मुखिया पिता होता था तथा परिवार के अन्य समस्त प्राणी उसकी आज्ञा का पालन करते थे। यद्यपि पत्नी गृह की संचालिका होती थी, तथा गृह में उसकी सत्ता सर्वोपरि मानी गयी थी किन्तु फिर भी अपने पति के अधीन होती थी।[1] संतान का परम कर्तव्य था अपने माता–पिता की आज्ञा का पालन करना। माता–पिता का परिवार में समान स्थान था, इसी महत्त्व के आधार पर कौशल्या ने राम से कहा था –''जिस गौरव से राजा तुम्हारे पूज्य हैं उसी गौरव से मैं भी पूज्य हूँ। अतः मैं तुमको मना कर नहीं हूँ तुम वन मत जाओ।[2]

> यदैव राजा पूज्यस्ते गौरवेण तथा त्वां नाहं नानुजानमि न गन्तव्यमितो वनम्।

गृह में प्रमुख प्रभुता रखते हुये भी पत्नी का परमधर्म अपने परिवार की परम्पराओं एवं मर्यादाओं की रक्षा करना था अपने इसी धर्म का परित्याग कर देने के कारण कैकेयी कुलघातिनी आदि शब्दों की पात्र बनी। गृह प्रबंध के साथ ही अपने गुणों के आधार पर पति के मन पर पूरा अधिकार रखती थी।[3] वस्तुतः आदर्श पत्नी वही मानी जाती थी जिसमें दासी, सखी, पत्नी, भगिनी एवं माता इन समस्त रूपों का समावेश हो''[4]

> ''यदा यदा च कौशल्या दासीव च स भार्यावद् भगिनीवच्च मातृवच्चोपतिष्ठति।''

आदर्श पत्नी के साथ पुरुष धर्म, अर्थ,काम को सिद्ध कर लेता था।[5] वस्तुतः पत्नी पति की ही आत्मा है।[6] रामायणकालीन समाज स्त्रियों को देवि, कल्याणि, भद्रे, सुन्दरि, आदि आदरसूचक शब्दों से सम्बोधित करता है। नारियों के सम्मुख सम्मानपूर्ण वार्तालाप किया गया है तथा उनके सम्मुख क्रोध, आवेश में आना मर्यादा के विरुद्ध माना गया है[7]–

> 'नहि स्त्रीषु महात्मनः क्वचित् कुर्वन्ति दारुणम्'

ळनूमान[8] एवं विभीषण[9] हाथ जोड़कर प्रमाण करने के बाद सीता से वार्तालाप प्रारम्भ करते है।
वस्तुतः नारी अपने सदाचरण से ही अपने आपको वन्दनीया, सम्माननीया बनाती है। सती अनुसूया का सदाचार पातिव्रत इतना उत्ष्कृट है कि वे सर्ववन्दनीया थी। इसी प्रकार शबरी हीन जाति की होते हुए भी भक्ति भावना के कारण ऋषियों द्वारा सम्मानित हुई।[10] सीता का चारित्रिक माहत्म्य इतना महान् था कि वे जगज्जननी सीता कहलायी । विवाह का आधार प्रीति ही था, राम–सीता के दाम्पत्य को आदर्श बनाने वाली परस्पर प्रति अनन्यता, संवेदना परस्पर सुख दुःखानुभव ही है।[11] गृहस्थाश्रम में धर्म , अर्थ तथा काम का संतुलन बनाये रखना आवश्यक था।[12]
रामायण में यद्यपि राजघरानों से लेकर साधारण परिवारों तक बहुपत्नीत्व प्रथा थी, पर वाल्मीकि जी ने रामायण में एक पत्नीव्रत की महिमा का विस्तार किया है। एक पत्नीव्रतों को दिव्य लोकों की प्राप्ति होती है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ऐसे दृढ़ पत्नीव्रता हैं जो यज्ञ में सीता की स्वर्ण प्रतिमा में स्थापना करते हैं पर अपने व्रत का त्याग नहीं करते हैं।[13] इसके विरुद्ध स्त्रियों के लिए बहुपतित्व निंदा का विषय था, तारा, रंभा, मंदोदरी दो पति होना पुनर्विवाह का उदाहरण है, एक समय में दो विवाहों का नहीं। रामायण में सर्वत्र धार्मिक क्रिया–कलापों में नारी की स्पष्ट प्रमुखतः दिखायी देती है। उसकी अनुपस्थिति में पति यज्ञ कार्य नहीं कर सकता था। वस्तुतः पत्नी का कर्तव्य तथा अधिकार था कि वह पति की सहधर्मचारिणी वन कर उसे यज्ञ द्वारा देव ऋण तथा पुत्रोत्पति द्वारा पितृ–ऋण से मुक्त कराये। अतएव पुरुष सपत्नीक यज्ञ के अधिकारी थे। दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ में तीनों रानियां साथ रही थीं। राम ने अवश्मेघ यज्ञ में सीता की स्वर्ण मूर्ति स्थापित की थी। पत्नी अकेली भी यज्ञ कर सकती थी। राम के युवराज्याभिषेक के दिन कौशल्या प्रातःकाल से अकेली स्वस्तिगायन करने में लगी थीं।[14] इसी प्रकार तारा

बालि–सुग्रीव संग्राम के दिन अकेली स्वस्तियाग कर रही थीं।[15] पति के साथ पत्नी का भी राज्याभिषेक किया जाता था।[16] पति के शमशान कार्य में विधवा पत्नी भी सम्मिलित होती थी। दशरथ की रानियों[17] तथा तारा[18] ने अपने पति के श्मशान कार्य किये थे। पितृ तर्पण का भी उन्हें अधिकार प्राप्त था।[19]

इस प्रकार हम देखते हैं कि रामायण काल में स्त्रियों के धार्मिक अधिकार अत्यन्त व्यापक थे। पति हित के लिए सीता देवताओं से मंगलयाचना करती थीं। वनवास की निरापद शांति के लिए उन्होंने गंगा कालिन्दी, वट–वृक्षादि की स्तुति की थी।[20] पति–भक्ति की महत्ता पुनः पुनः दिखायी गयी हैं। रामायण में यदि कोई स्त्री पति सेवा नही करती तो वह जप–तप करने पर भी नरकगामी होती है। किन्तु पति सेवा करने पर भी उत्तम लोक को पा लेती है। अनुसुइया की दृष्टि में दुष्ट प्रकृति, उदण्ड, कामी, निर्धन पति भी श्रेष्ठ देवतातुल्य है।[21] सीता का कहना है कि यदि उनके पति दुःशील, चरित्रहीन भी होते तब भी वे उनकी उसी प्रकार सेवा करती जैसी अब सर्वगुण सम्पन्न होने पर कर रही हैं।[22] कैकेयी ने रणभूमि में पति के रथ का पहिया टूट जाने पर अपने प्राणों पर खेल कर उनकी रक्षा की थी।

अशोक वाटिका में रावण ने सीता को भांति–भांति के प्रलोभन दिये किन्तु पतिव्रता सीता ने रावण को धिक्कारते हुए गर्जना कि मै पुरूषसिंह रामचन्द्र के अनुकूल रहने वाली उनकी पत्नी हूँ तू गीदड़ होकर मुझे छूना चाहता है, जिस प्रकार सूर्य की प्रभा को छुआ नहीं जा सकता उसी प्रकार तू भी मुझे छू नहीं सकता।[23] सीता ने कहा था दीन हो या राजच्युत, पति ही मेरा गुरू है।[24] चन्द्रमा का उष्ण होना अग्नि का शीतल होना और सागर का जल मीठा होना सम्भव हो सकता था परन्तु सीता सतीत्व पथ पर अटल थी। अपने सतीत्व के प्रभाव से सीता ने हनुमान की पूछ की अग्नि को शांत कर दिया।

पति से विरहिता स्त्री की जीवनचर्या एवं धर्म कर्म का वर्णन विरहिणी सीता के चित्रण में पूर्ण रूप से स्पष्ट हुआ है वे अपना सारा समय स्नान, पूजा, व्रतोपवास, संध्यावन्दनादि कार्यों में लगाती थी। उनका जीवन सादा वेष सादा भोजन, तथा मनोरंजनों से रहित था। वे एक वेणी धारण करती थीं, पृथ्वी पर शयन करती थीं, यम–नियम का पालन करती थीं, पति का दिन रात समरण करती हुई तथा व्रतचर्या में लीन रह कर अपना शेष जीवन काट रही थीं।[25] नारी को आत्म संरक्षण में असमर्थ मानकर उसके लिए पिता, पति, पुत्र या संबंधी पुरुषों के संरक्षण में रहना उचित माना गया है। जहाँ पति को देवता मान कर उसकी सेवा पूजा ही नारी का धर्म है वही उसकी हृदय स्वामिनी होने के कारण अपना रोष प्रकट करने की उसे पूरी स्वतंत्रता भी प्राप्त हैं।

नारी की चोरी या अपहरण अत्यन्त घृणास्पद माना गया है।[26] रावण से विभीषण ने कहा था कि उसने सीता की चोरी करके धर्मार्थ नाशक कार्य किया है।[27] उसके सीता का अपहरण करने से ही रावण कुल नष्ट हुआ है। मन्दोदरी ने कहा था पतिव्रता के आँसू व्यर्थ नहीं जाते। सीता का अपहरण करने से ही रावण कुल नष्ट हुआ है।[28] अपहर्ता स्त्री की बड़ी विषम अवस्था होती थी। अग्नि परीक्षा से सीता का अखण्डित सतीत्व प्रमाणित हो जाने पर भी राम लोकापवाद को सह न सके और उन्होनें सीता का परित्याग कर दिया। जहाँ पत्नी के लिए पातिव्रत का जटिल बंधन था वहीं पति के लिए भी स्वदारनिरत होना था। एक पत्नीव्रती होने को कारण ही राम और भी अधिक आराध्य बन गये। ऐसे पति की भत्र्स्ना की गयी है जो परस्त्रीगामी तथा अपनी स्त्री के अधिकारों का हनन करने वाला है।[29]

रामायण काल में पति को सम्बन्ध विच्छेद का अधिकार प्राप्त नहीं था । माता कैकेयी, अहिल्या, तथा सीता क्रमशः पति की उपेक्षा, स्वार्थ, व्यभिचार तथा लोकापवाद की स्थितियों में त्याग दी गयी स्त्री को पुनः स्वीकार भी किया जा सकता था। जैसे अहिल्या एवं सीता का पुनर्ग्रहण। रामायण में कन्या के प्रति उपेक्षा–भाव को व्यक्त करने वाली उक्तियां प्राप्त नहीं होती है। वाल्मीकिरामायण के एक दो प्रसंगों में कन्या की दयनीय दशा वर्णित हुई है। यथा अशोक वाटिका में वन्दिनी सीता के विलाप की उपमा निर्जन वन में छोड़ी गयी बालिका के रूदन से देना[30] तथा क्षेत्र में हल चलाते समय रोती हुई सीता की प्राप्ति होना।[31]

> ''कान्तारमध्ये विजने विसृष्टा कालेन कन्या विललाप सीता।''

किन्तु इन तथ्यों के आधार पर यह प्रमाणित नहीं होता कि उस काल में कन्या उपेक्षित थी। क्योकि सहोदरा न होते हुए भी सीता का लालन पालन जनक की पत्नी ने सच्चे मातृस्नेह से किया था।[32] यहाँ तक कि ऐसी धारणा थी कि कन्या की प्राप्ति लम्बी तपस्या से होती है।[33] रामायण काल में वयस्का कन्या के विवाह के लिए माता पिता चिंतित होते थे। सीता ने अनुसूया से वयस्कावस्था में अपना विवाह होना बताया है।[34]

पिता की अनुमति और स्वीकृति में कन्या की भी अत्यधिक श्रद्धा होती थी। इसी प्रकार वर भी पितृवश होते थे। राम ने धनुषभंग करके विवाह का अधिकार तो प्राप्त कर लिया था परन्तु फिर भी पिता की अनुमति से पूर्व उनका विवाह नहीं किया गया था। रामायण काल में भी विवाह में कन्या को यथाशक्ति दहेज देने का पर्याप्त प्रचार था। किन्तु इससे वर पक्ष का कोई लाभ या इच्छाभाव नहीं होता था। कन्यादान में जो कुछ भी धन दिया जाता था वह कन्या की निजी सम्पत्ति बनकर स्त्री धन कहलाता था।[35]

प्रत्येक काल अथवा शास्त्र में सामाजिक अथवा नैतिक सभी दृष्टियों से माता के रूप में नारी का सर्वोच्च मातृत्व में है। माँ बनकर ही वह जननी, जाया और यात्री कहलाती है। संतान के चरित्र निर्माण की मूलाधार माता ही मानी जाती थी, पिता नही। माता पुत्र के संबंध गौ–वत्स प्रेम के समान महत्वपूर्ण थे। कौशल्या राम का अनुगमन करने के वत्सानुगमिता गौ की भांति उद्यत हो गयी थी। किन्तु फिर भी नारी के लिए पति तथा पुत्र के मध्य पति प्रेम को ही प्रधानता प्राप्त हुई। सुमंत्र ने कैकेयी से कहा था कि करोड़ो पुत्रों से भी पति अधिक महत्त्वशाली है।[36]

निष्कर्ष

इस प्रकार रामायण में नारी के विविध पक्षों का चित्रण हुआ है नारी परिवार की धुरी समाज के प्रत्येक कार्यों में पुरुष की सहभागिनी होती थी। सही अर्थों में नारी सेवा और त्याग की मूर्ति है परन्तु आज नारी की स्थिति कुछ भिन्न है। आज परिवार में असंतुलन आ रहा है कारण स्त्री अब ज्यादा शिक्षित है अधिक जागरुक है अपने अधिकारों को जानती है। घर परिवार से परिभाषित होने वाली नारी की आज एक अलग पहचान बन गयी है। निश्चित रूप से यह विकास एक अच्छा संकेत है क्योंकि एक शिक्षित स्त्री एक शिक्षित परिवार समाज को देती है परन्तु पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर आज की नारी को अपने सहज गुणों सेवा, त्याग, दया, करुणा, और धैर्य को नहीं त्यागना है यह गुण ही उनके आभूषण है। पुरुष की समानता करने में हमें पुरुष नहीं बनना है हमारी शोभा तो

नारी पद की गरिमा बनाये रखने में ही है। यदि हम यह सोचे कि हम क्यों समझौता करें तो वह इसलिए क्योंकि पुरुष को इतना धैर्य ईश्वर ने दिया ही नहीं है। स्त्री पृथ्वी के समान धैर्यवान है, शांति सम्पन्न है, सहनशील है। पुरुष में स्त्री के गुण आ जाते हैं तो वह महात्मा बन जाता है और यदि नारी स्त्री सुलभ गुणों को त्याग कर पुरुष बनती है तो उसका पतन होता है। नारी के पास दान देने के लिए दया है, श्रद्धा है, त्याग है अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए तेजस्विता भी है। ध्यान यह रखना है कि इस तेजस्विता की आंच में सीता की तरह प्रकाशित करने की सामार्थ्य हो, न की जलाने की ललक, यह संदेश रामायण से लेकर हम अपना जीवन आलोकित कर सकते है।

सन्दर्भ

1. वाल्मीकि रामायण 2,20,34
2. वाल्मीकि रामायण, 2,21,25
3. वाल्मीकि रामायण, 2,48,06
4. वाल्मीकि रामायण, 2,12,68,69
5. वाल्मीकि रामायण, 2,21,57
6. वाल्मीकि रामायण, 2,37,24
7. वाल्मीकि रामायण, 4,33,36
8. वाल्मीकि रामायण, 5.33,02
9. वाल्मीकि रामायण, 7,114,09
10. वाल्मीकि रामायण, 6,114,27,6.118,20
11. वाल्मीकि रामायण, 2.27,20,21
12. वाल्मीकि रामायण, 4.38,20,21
13. वाल्मीकि रामायण, 2.99,7.8
14. वाल्मीकि रामायण, 4.16,12
15. वाल्मीकि रामायण, 6.128,.59,61
16. वाल्मीकि रामायण, 2.76,20,23
17. वाल्मीकि रामायण, 2.76,23
18. वाल्मीकि रामायण, 4.25,35,52
19. वाल्मीकि रामायण, 2.76,23
20. वाल्मीकि रामायण, 3.52,82,92
21. वाल्मीकि रामायण, 2.117.23,24
22. वाल्मीकि रामायण, 2.118,3.9
23. वाल्मीकि रामायण, 5.20.15,5.21,16
24. वाल्मीकि रामायण, 5.24,9,12
25. वाल्मीकि रामायण, 5.28–12,2–108.8
26. वाल्मीकि रामायण, 2.61.24
27. वाल्मीकि रामायण, 6.9.13–22
28. वाल्मीकि रामायण 16.111.66–61
29. वाल्मीकि रामायण, 2.75,52
30. वाल्मीकि रामायण, 2.118.28,29
31. वाल्मीकि रामायण, 1.25.5–6
32. वाल्मीकि रामायण, 2.118,30–33
33. वाल्मीकि रामायण, 1.25.5–6
34. वाल्मीकि रामायण, 2.118,34
35. वाल्मीकि रामायण, 7.86,9–11,1.66,15–26
36. वाल्मीकि रामायण, 1.77,26